RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जनजातीय महिला समुदाय में सामाजिक परिवर्तन : सामान्य विश्लेषण

डॉ बलवीर सेन

सह–आचार्य (समाजशास्त्र) राजकीय महाविद्यालय, मेड़ता सिटी, नागौर (राज0)

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 30 March 2018

Keywords
जनजातीय, महिला, समाज, संस्कृति।

ABSTRACT

महिला जनजातियों के सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में उत्तरदायी कारकों के रूप में नगरीकरण की प्रभावित कम नहीं है। शहरी जीवन शैली एवं सामाजिक सास्कृतिक संपर्क ने इन्हें झकझोर सा दिया है। स्वतंत्रता के बाद देश विकास की ओर उन्मुख हुआ। छोटे–बड़े कस्बों ने व्यापार, उद्योग एवं आवागमन में वृद्धि के कारण नगरों का रूप धारण किया है। इस प्रक्रिया से जनजातीय क्षेत्र भी अछूते नहीं रहे। इनके क्षेत्रों में नगरों की संख्या बढ़ी है। नगर में रोजगार के नये अवसरों ने जनजातीय जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित किया है। शहरी जीवन शैली एवं बाहरी लोगें के संपर्क से जनजातीय संस्कृति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

शोध विस्तार– सर्वप्रथम उनकी परम्परागत वस्तु विनिमय की अर्थ व्यवस्था में मुद्रा की आर्थिक व्यवस्था ने स्थान प्राप्त किया। नगरों की आवश्यकतानुरूप पूर्ति हेतु उत्पादन की ओर भी ध्यान जाना अपरिहार्य हो गया। परम्परागत वस्तु विनिमय के साथ–साथ नकदी फसलों यथा शाक–सब्जी आलू मटर, गोभी आदि का भी उपज किया जाने लगा। पशुपालन दूध–घी, मांस आदि की पूर्ति का माध्यम स्थानीय बाजारों में महिला जनजातियाँ ही बनीं दूसरी तरफ शहरों में तैयार माल जैसे सिले सिलाये कपड़े, एल्यूमिनियम के पात्र, प्लास्टिक उत्पादन मग, सोप केस, कंधी, आइना, सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री इत्यादि जनजातियों के घरों में प्रवेश किया है। जनजातियों के क्षेत्रों में नगरों के अभ्युदय से उनके सामाजिक आचार–विचारों पर भी प्रभाव पड़ा। गैर जनजातियों का संपर्क किंचित वैवाहिक संबंधों में भी आया है। शहरी लोगों के रहने के ढंग को काफी सीमा तक अपनाया गया है। परम्परागत वस्त्रों के साथ–साथ नये वस्त्रों तथा कुर्ता–पायजामा, पैंट–शर्ट, जीन्स एवं अत्याधुनिक चमकीले रंगीले कपड़े को ये धारण करने लगी हैं। खान–पान भी बदले हैं। बाजारों की सुंदर मिठाईयाँ, चाय, ठंडा एवं नमकीन, बिस्कुट आदि खाद्य वस्तुएं इनके यहाँ प्रयोग किया जाने लगा है।[1]

यदि यह कहा जाए कि औद्योगीकरण के द्वारा ही नगरीकरण की प्रक्रिया प्रादुभूर्त हुई तो अतिसंयोक्ति नहीं होगा, क्योंकि नगरीकरण को तीव्र गति देने में औद्योगीकरण का बहुत बड़ा हाथ है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद और स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् औद्योगिकरण तीव्र गति से हुआ है। आज भारत के कुछ जनजातीय क्षेत्र औद्योगिक क्रांति से गुजर रहे है। औद्योगीकरण का जनजातीय संस्कृति पर प्रभाव उल्लेखनीय है। औद्योगीकरण ने उनके एक समान विशिष्ट एवं लोक–जीवन शैली पर जबर्दस्त प्रभाव डाला हैं। औद्योगीकरण के प्रारम्भिक चरण में उनका स्थानीय जीवन अस्त व्यस्त सा हो गया था। वे अकुशल मजदूर श्रमिक के रूप में कार्य करते, किन्तु औद्योगिक संयंत्रों का निर्माण होने के पश्चात् आधे से अधिक लोग बाहर के औद्योगिक क्षेत्रों से आये। परिणाम यह हुआ कि अनुभवहीनता के आधार पर स्थानीय लोग छँट गए और बाहर के लोगों को अनुभव के आधार पर वरीयता मिली। स्थानीय जनजातियों को अकुशल एवं अर्द्धकुशल श्रमिक के रूप में कुछ औद्योगिक इकाईयों में स्थान मिला। ऐसे औद्योगिक संयंत्रों में काम करने वाले जनजातिय श्रमिकों का अन्य बाहरी लोगों से संपर्क हुआ जिसका सीधा प्रभाव उनकी संस्कृति पर पड़ा। उनके सामाजिक संगठन में परिवर्तन तो आया ही साथ–साथ वे वस्त्र आभूषण तथा प्रसाधन सामग्री जैसे कैमरा, घड़ी, टार्च, रेडियो, साईकिल एवं चश्मा इत्यादि का प्रयोग खेतिहरों की अपेक्षा अधिक करने लगे है। विद्यार्थी (1970), राजेन्द्र सिंह (1967), सरकार (1970), शर्मा (1960). सिंह चंद्र लाल (1987) एवं सिंह मंगला प्रसाद (1984) के अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि औद्योगिकरण ने जनजातीय–सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को पूर्णतः झकझोर सा दिया है।[2]

देश में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के प्रारंभ के साथ ही जनजातियों के आस–पास खानें, कारखानें तथा मण्डियाँ उठ खड़ी हुई हैं। इन मण्डियों में जनजातियों का अन्य लोगें से संपर्क हुआ। इन औद्योगिक केन्द्रों में, मण्डियों, हाटों में आदिवासी लोग जीवन का जो चकाचौंध देखते हैं वह उन्हें प्रगतिशील लोगों की सांस्कृतिक विशेषताओं को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है और अब इस प्रक्रिया में निरन्तर गति प्राप्त हो रही है।

जनजातीय संस्कृति में परिवर्तन यातायात के साधनों पर भी निर्भर करता है। यातायात के साधन न केवल भौगोलिक गतिशीलता को बढ़ाते हैं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता को भी बढ़ाते है। अध्ययन क्षेत्र खनिज पदार्थों, अन्य सम्पत्तियों

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

एवं कृषि उत्पादनों से सम्पन्न होने के नाते व्यापारियों, उद्योगपतियों एवं सरकार को अपने तरफ आकर्षित किया है, जिसके कारण सरकार ने सड़कों की सुविधाएं प्रदान कि है। जिसने जनजातियों की अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन को गंभीरता से प्रभावित किया है। स्थानीय हाट एवं बाजार सड़कों के नाते विकसित हुए जहाँ दैनिक वस्तुएं ये क्रय–विक्रय करते हैं। ऐसे बाजारों में बस स्टाप होने से उन्हें अन्य महानगरों तक जाने और कार्य करके लौटने का अवसर प्राप्त हुआ साथ ही महाजनों एवं व्यापारियों का भी यह आय का केन्द्र बना। इन समस्त प्रक्रियाओं के चलते जनजातियों से भिन्न लोग इनको अन्य गांवों में बड़ी तेजी से प्रचारित कर रहे हैं। नदियाँ एवं नहरें भी जो यद्यपि इन जनजातीय क्षेत्रों में बहुत कम ही हैं फिर भी वहीं प्रयोजन सिद्ध करती हैं जो सड़कें एवं रेलें।[3]

जनसंचार की व्यवस्था आधुनिक समाजों में ही नहीं अपितु जनजातीय समुदाय में भी अविभाज्य व्यवस्था बन गयी है। आज का युग जन संचार का युग हो चुका है। जनसंचार माध्यमों के प्रसार ने एक नूतन संस्कृति को जन्म दिया है वह है संचार की संस्कृति संचार की संस्कृति आज के मानव के जीवन में इतना अन्दर तक बैठी हुई है कि मनुष्य का सोचना–विचारना, करना और रखना जैसे संस्कृति का मूल सैद्धान्तिक अर्थ जिसकी विवेचना टायलर अपने सिद्धान्तों में प्रस्तुत करते थे के अन्तर्गत समाविष्ट है। संचार विचारों, मतों, धारणाओं, अनुभवों, अनुभूतियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने की कला है। संचार सम्प्रेषण का मुख्य उद्देश्य वैचारिक धरातल पर सहभागिता स्थापित करना होता है। वस्तुतः संचार का मतलब ही होता है किसी बात को आगे बढ़ाना, चलाना या फैलाना। यही कारण है कि संचार को सभी समाजिक प्रक्रियाओं का आधार माना है चाहे वह जनजातीय समाज हो या कृषक समाज या औद्योगिक समाज।

जनजातीय समाज में तो सीमित समुदाय में रहकर ही व्यक्ति अपना कार्य चला लेता था किन्तु यातायात और जनसंचार के साधनों के बढ़ने के साथ तथा आधुनिक शिक्षा का प्रसार होने के कारण सम्प्रेषण की व्यवस्थाएं न केवल महत्वपूर्ण हुई अपितु सांस्कृतिक परिवर्तन का कारक भी बन गयी है।[4]

आज इनके यहाँ टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, पाक्षिक एवं मासिक पत्र–पत्रिकाएं सामुदायिक विकास केन्द्रो के माध्यम से गाँव–गाँव में अवलोकित होने लगा है। समाचार पत्र संसार भर के समाचार तो देते ही हैं साथ ही साथ ये जनजातियों को अपने आस–पास के गाँव, शहर, कस्बा और संसार के अन्य संस्कृतियों, सभ्यताओं की भी जानकारी सम्यक रूप से उपलब्ध कराते हैं। सुदूरवर्ती देश तथा उनके निवासी जिनकी विधियाँ तथा विचारधाराएं उनसे बहुत भिन्न हैं समाचार पत्रों के माध्यम से उनके दृष्टि पथ में आती है। वे समाचार पत्र द्वारा अंकित दृष्टिकोणों और विचारों में भाग लेना आरंभ करती है लोक सभा एवं विधान सभा के चुनावों में वयस्क मताधिकार पर समाचार पत्र का प्रभाव जनजातियों में अधिकांशतः पाया गया है।[5]

सोनभद्र की दुद्वि तहसील की जनजातीय समुदाय में रेडियों का व्यापक प्रचलन देखने में आया है, इससे ये मनोरंजन के आधुनिक गाने तो सुनते ही हैं साथ–साथ प्रदेश, देश–विदेश के समाचार, कृषि संबंधी वार्ता, युगवाणी इत्यादि कार्यक्रमों द्वारा इनको अनेक उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। जिससे इनके कृषि उत्पादन में गुणोत्तर वृद्धि हुई है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके सांस्कृतिक परिवर्तन पर पड़ता है। टेलीविजन का प्रयोग कतिपय महिला परिवार ही किया करते है। जो औद्योगिक केन्द्रों में कार्यरत थे या किसी कार्यालयों में उनके परिवार के सदस्य नौकरी करते हैं अथवा ग्राम्य विकास समितियों के माध्यम से टेलीविजन की सुविधा प्रदत्त थी तो उसका ये अवलोकन करते है। ये समस्त साधन इनके सांस्कृतिक परिवेश में गति प्रदान किए हैं इसमें कोई संदेह नहीं हैं।[6]

डाकघर भी जनजातीय संस्कृति में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है। इनके कतिपय गाँव में डाकसेवा (डाकघर) देखने को मिला। जहाँ ये पत्र–पत्रिकाएँ, मनीआर्डर, बीमा आदि लेन–देन करती है। आजीविका के लिए सुदूर कार्य संस्थानों में गये जनजातीय सदस्य तथा उनके घर के सदस्यों से संपर्क रखने का महत्वपूर्ण साधन डाकघर ही है। जनजातिय सदस्य अब अपने घर पर पत्र लिखते हैं आवश्यकता पढ़ने पर पैसा भी भेजते है। और अब अपने परिवार से अविछिन्न संबंध बनाये रखते हैं। जबसे सदस्य अपने घरों को अन्य संस्थानों से वापस लौटते हैं तो नये विचार, नयी वस्तुएँ तथा नवीन जीवन पद्धति अपने साथ लाते हैं जो उनके स्थानीय जीवन पद्धति को प्रभावित करती है। डाकघर से डाकिया पत्र इत्यादि इनके घरोंपर देने जाता है जो कि एक सरकारी कर्मचारी होता है उसके साथ बात–चीत, रहन–सहन उनके वेश–भूषा का भी प्रभाव उनकी संस्कृति पर अवश्य ही पड़ता है। तार तथा टेलीफोन ने डाकघर की उपयोगिता और भी बढ़ा दिया है। हांलाकि तार तथा टेलीफोन का उपयोग यहाँ जनजातियाँ पूर्णतः नहीं कर पा रही है फिर भी औद्योगिक संस्थानों एवं सरकारी कार्यालयों में कार्यरत जनजातीय लोगों को अंशतः टेलीफोन का प्रयोग करते हुए देखा गया। सुदूर गाँव में डाक द्वारा स्थानीय लोगों को समाचार पत्र उपलब्ध होने से भी परिवर्तन का द्रुत्तर होने में सहायता मिली है।

संस्कृतीकरण सामाजिक सांस्कृतिक गतिशील 1966 प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना में सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता की प्रक्रिया के विश्लेषण के संदर्भ में सर्वप्रथम श्रीनिवास (1966) ने संस्कृतीकरण के सम्प्रत्यय का प्रयोग किया है। उन्होंने कहा है कि ''संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जातियाँ कोई जनजाति अथवा अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचार–धारा और जीवन पद्धति को बदलती है।''[7]

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्कर्ष– संस्कृतिकरण से संबंध गतिशीलता के परिणामस्वरूप पदमूलक परिवर्तन होते है। इसका तात्पर्य यही है कि एक जाति अपने आस–पास की जातियों से उपर भी उठ सकती है और नीचे भी आ सकती है। इस प्रकार के परिवर्तन सोपान क्रम में होते है। व्यवस्था में नही अर्थात् संस्कृतिकरण की प्रक्रिया केवल हिन्दू जातियों तक ही सीमित नहीं अपितु यह अन्य जातियों में भी पायी जाती है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया महिला जनजातियों में भी देखने को मिलती है। ये अपने को क्षत्रिय कहलाना पसन्द करती है। क्षत्रिय जीवन शैली को अपनाना, जनेउँ धारण करना, पूजा–पाठ करना और अपने को जनजातिय राजा कहलाना पसन्द करती हैं और इसी प्रकार भारत की अनेक जनजातियाँ संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में हिन्दू एवं क्षत्रिय जीवनशैली को अपनाकर अपने सामाजिक स्तर को उँचा उठाने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूची–

[1] पाण्डेय, पुष्पलता (1961) : ''जनजातीय समस्याएं एवं बेरोजगारी'' जनजाति विशेषांक, निदेशक, हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्रालय, उ.प्र., पृ. 26–27

[2] मिश्रा, के.वी. (1974) : ''जनजातिय त्यौहार'' जनजाति विशेषांक, निदेशक हरिजन एवं समाजकल्याण मंत्रालय, उ.प्र., पृ. 23.

[3] जे. एडवर्ड, जे. (1961) : ''रिविटलाइजेशन मूवमेंट इन ट्राइबल इण्डिया'' इन आस्पेक्टस आफ रेलिजन इन इण्डियन सोसायटी, एडिअड बाई विद्यार्थी, एल.पी. केदार नाथ रामनाथ एण्ड संस, मेरठ पृ० 145

[4] सिंह, योगेन्द्र (1973) : माडर्नाइजेशन आफ इण्डियन ट्रेडिशन, थामस प्रेस प्रा.लि. नई दिल्ली पृ० 19

[5] सिन्हा, एस.सी. (1961) : ''स्टेट फोर्मेशन एण्ड राजपूत माइथ इन सेन्ट्रल इण्डिया मैन इन इण्डिया, खण्ड 42 अंक, पृ० 130

[6] श्री निवास, एम.एन. (1966) : सोशल चेन्ज इन मार्डन इण्डिया, लास एंजिल्स, कैलिफोर्निया, पृ0 6.

[7] विद्यार्थी, एल.पी. (1970) : सोसियो कल्चरल इम्प्लिकेशन आफ इण्डस्ट्रियलाइजेशन ए केस स्टडी आफ ट्राइबल रिसर्व, काउन्सिल आफ कल्चरल एण्ड सोशल रिसर्च, राँची, बिहार पृ० 13

© RRIJM 2015, All Rights Reserved